बाबा मुक्तानन्द की सिखावनी

१

सत्संग शब्द बहुत शक्तिपूर्ण है और इसे समझना बहुत आवश्यक है। इसका जन्म भारत में हुआ और यह शब्द सन्तों व साधुओं की संगति का वर्णन करता है। सत्संग का अर्थ है, गुरु के साथ होना या उनके पास होना, परन्तु इससे भी अधिक, इसका अर्थ है, गुरु की आत्मा के साथ एक हो जाना। श्रीगुरु के साथ एक हो जाना, अपनी ही आत्मा में पूर्ण हो जाना है। इसके लिए, एकात्मता, आत्मबोध, पूर्णोऽहम् — "मैं पूर्ण हूँ" का भाव ही पर्याप्त है।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, गुरुतत्त्व-सार [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, १९९९] पृ. ८६

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।